P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारत में राष्ट्रवाद का उदय एवं वर्तमान स्वरूप

शैफाली सुमन
एसोसिएट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
महारणा प्रताप राजकीय महाविद्यालय,
सिकन्दराराऊ, हाथरस, उ0प्र0, भारत

सारांश

हम सब एक हैं

''साम्प्रदायिक, प्रान्तीय और भाषायी संघर्ष देश को कमजोर बनाते हैं। इसलिए हमें राष्ट्रीय एकता को मजबूत करना है''

–लाल बहादुर शास्त्री

वर्तमान समय वैश्वीकरण, उदारीकरण का है, विश्व पर ग्लोबल वार्मिंग का खतरा एवं तीसरे विश्व युद्ध का खतरा मंडराता रहता है साथ ही गृह युद्ध, धर्म युद्ध, आतंकवाद, साइवर हमले से मानव जाति जूझ रही है। भारत वर्ष भी इन वैश्कि समस्याओं से अछूता नहीं है। हालांकि भारत भी लगभग महाशक्ति बन चुका है। किन्तु इसकी प्रगति और विकास को नक्सलवाद, आतंकवाद, क्षेत्रवाद, प्रान्तवाद, भाषावाद समय–समय पर रोक देते है और ऐसा लगता है कि हमारे राष्ट्रवाद को खतरा पहुँच रहा है। राजनीति एवं सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार चरम सीमा पर है। जातिवाद, साम्प्रदायिकता, जातीय दंगे, भीड़ हिंसा, धार्मिक उन्माद, गौकसी, जातीय पंचायतें भी भारतीय समाज को चोट पहुँचाती हैं। ऐसे समय में राष्ट्रवाद पर पुनः चिन्तन एवं मंडराते खतरों को दूर करने की आवश्कयता है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिये राष्ट्रवाद सदैव लोगों की मानसिक वैचारिकता में मौजूद होगा।

यह भी सर्वविदित है कि किसी भी देश का दबा कुचला निर्धन वर्ग इन सब समस्याओं का शिकार सर्वाधिक होता है। अतः शोषित, पीड़ित जनता को शान्तिपूर्वक जीने के लिये राष्ट्रवाद की नितान्त आवश्यकता है, जिसमें सिर्फ मानवता और मानव धर्म ही सर्वोपरि हो।

मुख्य शब्द : राष्ट्रवाद, मानवधर्म, नक्सलवाद, क्षेत्रवाद, प्रान्तवाद, मानवता आदि।

प्रस्तावना

राष्ट्रवाद एक सशक्त अवधारणा है। यह किसी देश के निवासियों की अपने देश के प्रति सर्वाधिक निष्ठा व प्रेम को अभिव्यक्त करता है। भारत विभिन्नताओं वाला देश है, यहाँ अनेक धर्म, संस्कृति, प्रजाति, सम्प्रदाय, भाषा आदि के लोग रहते हैं किन्तु भारत में सदियों से सात्मीकरण–सहिष्णुता, मानवीयता, बन्धुत्व के भाव विराजमान रहे हैं। जिनसे यह देश सदैव समृद्ध होता रहा है। यूनानियों, शकों, हुणों, यवनों, मुगलों एवं अंग्रेजो के आक्रमण एवं उनके रचने–बसने की प्रक्रिया ने सांस्कृतिक क्षय के स्थान पर उसे नवीन विचारों व सभ्यता के उपयोगी आयामों से परिचित कराकर समृद्ध एवं विकसित होने में अप्रत्यक्ष रूप से सहायता प्रदान की है। सर्वधर्म समभाव एवं साम्प्रदायिक भाईचारे की गंगा–यमुनी तहजीब पूर विश्व में भारतीय संस्कृति के उच्चतम आदर्श एवं महान जीवन मूल्यों, मानवीयता का संरक्षण आदि विशेषताओं से सुशोभित करती रही हैं। परिणाम स्वरूप विभिन्नताओं के बावजूद देशवासियों ने एकता, अखण्डता का पैगाम समय–समय पर दिया है। भारत की गंगा, जमुनी मिश्रित सभ्यता संस्कृति ही ऐसी है कि जो एक बार इस पावन मिट्टी पर रहने आया तो यहीं का होकर रह गया–

यूनान, मिस्र, रोमां सब मिट गए जहाँ से। अब तक
मगर है बाकी नामोनिशां हमारा। कुछ बात है कि हस्ती
मिटती नहीं महारी। सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहाँ हमारा।।

यह जो 'कुछ बात है' यह हमारी सांस्कृतिक निष्ठा है। भारतवासी आपस की संस्कृतियों की विशेषताओं को आत्मसात् कर लेते हैं, साथ ही सहिष्णुता व सहनशीलता, अन्य धर्मों का आदरभाव ही जो हमारी अनेकता में एकता को बनाए रख पाया है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. राष्ट्रवाद का भूतकाल एवं वर्तमान स्वरूप को जानना।
2. राष्ट्रवाद क्यों आवश्यक है?

3. राष्ट्रवाद पर उमड़ते खतरों को चिन्हित करना।
4. राष्ट्रवाद की प्रासंगिकता क्यों है?

अध्ययन पद्धति एवं उपकरण

प्रस्तुत शोध पत्र प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित है। प्राथमिक स्त्रोतों में साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है, जिसमें निर्दशन पद्धति द्वारा 30 व्यक्तियों का चुना गया जो कि व्यवसायिक, गैर व्यवसायिक, छात्र, समाजसेवी, अध्यापक आदि थे। द्वितीयक स्त्रोतों में पूर्ववर्ती साहित्य पत्र–पत्रिकाओं, दैनिक समाचार पत्र इत्यादि का प्रयोग किया गया है।

पूर्व साहित्य की समीक्षा

''भारत में राष्ट्रवाद का उदय एवं वर्तमान स्वरूप'' शोध समस्या के विश्लेषण हेतु पूर्व साहित्य का अध्ययन किया गया है। प्रोफेसर इरफान हबीव ने अपनी पुस्तक **'इण्डियन नेशनलिज्म'** राष्ट्रवाद पर भारत में स्वतन्त्रता पूर्व के राष्ट्रवादियों के उदार दृष्टिकोण धार्मिक, सांस्कृतिक क्रान्तिकारी, उदारवादी परिप्रेक्ष्य द्वारा राष्ट्रवाद, राष्ट्रीयता पर तथ्यपरक प्रकाश डाला है। कांचा इलैय्या, रोमिला थापर, निवेदिता मेनन, बद्रीनारायन, सतीश देश पाण्डेय, आनन्द कुमार, एम0एन0 श्रीनिवास, ए0आर0 देसाई, प्रो0 योगेन्द्र सिंह, चारू गुप्ता, डा0 प्रशान्त शुक्ल, रशीद किदवई आदि के समाजशास्त्रीय ऐतिहासिक साहित्य का अध्ययन विश्लेषण हेतु किया गया है।

राष्ट्रीयता क्या है?

राष्ट्रीयता की भावना किसी राष्ट्र के सदस्यों में पायी जाने वाली सामुदायिक भावना है जो उनका संगठन सुदृढ़ करती है। यह सांस्कृतिक, धार्मिक, भाषाई व अन्य संकीर्ण भावनाओं से उच्च देश के प्रति निष्ठा है व आपसी समभाव, आदर देश के विकास में समान योगदान, समान विकास के अवसर पर आधारित है और निष्ठाओं पर राष्ट्र टिका है।

राष्ट्रवाद का उदय

राष्ट्रवाद एक सतत् चलने वाली प्रक्रिया है इसका निर्माण एक दिन में नहीं होता है और ना यह जानबूझ कर उत्पन्न की जाती है। यह स्वतः विकसित होकर समाज में दृष्टिगोचर होती है। मनुष्य का अपने स्थान, संस्कृति, भाषा आदि से लगाव प्राकृतिक संवेग है, सामाजिक विरासत है। समान्य उद्देश्य, सामान्य लक्ष्यों को प्राप्त करने की जागरूकता राष्ट्रवाद से गहरे जुड़ी है।

इतिहासकारों, समाजशास्त्रियों का मानना है कि आधुनिक राष्ट्र राज्य और राष्ट्रवाद की परिकल्पना 16वीं –17 वीं सदी के यूरोपीय चिंतन की देन है। प्रो० मृदुला मुखर्जी के अनुसार यदि हम इतिहास के पन्ने पलटें तो पाते हैं कि भारतीय समाज के अतीत में ये दोनों ही गौरवशाली तथ्य विराजमान रहे हैं। मौर्यकाल, गुप्तकाल और मुगलकाल में भारतीय भू–खण्ड में विशाल साम्राज्यों की स्थापना हुई थी जिनमें जीवन शैली और सांस्कृतिक एकरूपता की निरन्तरता दिखाई देती है।

प्रो० योगेन्द्र सिंह के अनुसार राष्ट्रवाद तथा लोकतन्त्र की राजनीतिक संस्कृति भारतीय सामाजिक संरचना की अनिवार्य विशेषतायें व चरित्र रही है। राष्ट्रवाद राष्ट्रराज्य के प्रति जागरूकता से घनिष्ठता से सम्बद्ध है जो किसी राष्ट्र की स्वतंत्र सम्प्रभुता, स्वतंत्र राजनीतिक अस्तित्व पर आधारित तथा राजनीतिक चेतना से सम्बन्धित है। राष्ट्रवाद के विकसित होने में लोकतंत्र का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

विश्व में राष्ट्रवाद का विकास

सम्पूर्ण विश्व में अलग–अलग देशों की वैचारिक पृष्ठभूमि से राष्ट्रवाद विकसित हुआ जैसे फ्रांस में समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व राष्ट्र और राष्ट्रवाद के विकास का आधार बना, वहीं ब्रिटेन का राष्ट्रवाद औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप विकसित हुआ। ब्रिटेन में यह राजशाही व उपनिवेशवाद का मिला–जुला रूप था। इसके विपरीत जर्मनी का राष्ट्रवाद इनसे बिल्कुल अलग अपनी जातीय श्रेष्ठता को आधार बनाकर विकसित हुआ। उन्हें अपनी लोक संस्कृति पर अभिमान था और वही उनके राष्ट्र को एकताबद्ध करने का सूत्र बना। इसी तरह सोवियत रूस में मार्क्सवाद की स्थापना भी एक तरह से राष्ट्रवाद के विकास की ही अभिव्यक्ति थी।

भारत में राष्ट्रवाद का विकास

राष्ट्रवाद के विकास को स्वतन्त्रता से पूर्व और स्वतंत्रता के पश्चात् दो भागों में बांटा जा सकता है–

राष्ट्रवाद स्वतंत्रता से पूर्व

भारत में स्वंत्रता प्राप्त करने से पूर्व भारत भूमि को अंग्रेजों की गुलामी से स्वतंत्र करना ही राष्ट्रवाद सामान्य रूप से माना जाता था किन्तु राष्ट्रवाद की भाषा परिवर्तन की भाषा है। इसमें एक नए समाज की इच्छा निहित है। ऐसे समाज के निर्माण के लिये औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था पूरी तरह समाप्त करने की अनिवार्यता होती है। लोक राष्ट्रवाद (पॉपुलर नेशनलिज्म) ऐसी इच्छाओं और अनिवार्यता की ही अभिव्यक्ति है। राष्ट्रवाद की दो धाराएं थीं– एक धारा में नेताओं की गतिविधियां शामिल थीं और दूसरी में आम जनता की गतिविधियां। इनके बीच अत्यन्त जटिल सम्बन्ध रहा है, इन दोनों ने एक–दूसरे को प्रभावित किया है और एक–दूसरे पर अपनी स्थाई छाप भी छोड़ी है।

राष्ट्रवादी विचारधारा के प्रचार–प्रसार औपनिवेशिक राज्य के विरूद्ध अनेक जन आन्दोलन होने लगे। इन आंदोलनों में केवल विशिष्ट वर्ग ही नहीं था बल्कि इनमें आदिवासी, किसान, महिलाएं, मजदूर एवं विभिन्न जाति समूह सम्मिलित थे। ग्रामीण भारत ब्रिटिश अधिपत्य के समूचे दौर में आन्दोलनों, विद्रोहों और बड़ी संख्या हिंसात्मक संघर्षों का जीवन मंच हुआ। जिनमें विभिन्न स्तरों की ग्रामीण आबादी की विशाल हिस्सेदारी थी।

कुमार सुरेश सिंह के शब्दों में आदिवासियों ने भारत के किसानों समेत किसी भी अन्य समुदाय की तुलना में सबसे ज्यादा और सबसे हिंसक विरोध किए हैं। 1857 के बाद से ही अनेक आंदोलन जैसे संथाल विद्रोह, गुडेम–रंपा आंदोलन 1879–80 और 1886 के फितूरी, मंडा विद्रोह, ताना भगत, आंदोलन, किसान आंदोलन, मापला विद्रोह, पबना विद्रोह, दक्कन विद्रोह, नील विद्रोह, आदि भारतीय राष्ट्रवाद के उदय का परिणाम थे।

1857 के बाद आधुनिक शिक्षा का जन्म हुआ परिणाम स्वरूप भारतीय जनता के कुछ सम्पन्न वर्गों को राष्ट्रवाद, उदारवाद और समाजवाद जैसी विचारधाराओं

की अधिकाधिक जानकी मिलती रही और उनमें राजनीतिक चेतना का विकास हुआ। ऐसे समय में जबकि प्रत्येक स्तर पर ब्रिटिश सत्ता का प्रशासनिक और आर्थिक पंजा कसता जा रहा था, अनेक शिक्षित भारतीय दृढ़ता से यह अनुभव करने लगे थे कि उन्हें अपनी राष्ट्रवादी मांगों को वाणी देने के लिए किसी न किसी मंच की या राजनीतिक संगठन की आवश्यकता है। फिरोजशाह मेहता, के.टी. तेलंग, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, डब्ल्यू.सी. बनर्जी, एम.जी. रानाडे और कई अन्य व्यक्तियों ने पहल की और अनेक स्थानीय संगठन उठ खड़े हुए। कुछ महत्वपूर्ण संगठनों के नाम ये हैं : पूना सार्वजनिक सभा (1870), द इण्डियन एसोशिएशन (1876) जिसने 1877–78 में सिविल सेवाओं के भारतीयकरण के लिये और प्रैस एक्ट के विरूद्ध अखिल भारतीय स्तर पर विरोध आयोजित किए तथा बॉम्बे प्रेसिडेंसी एसोशिएसन। इसके पश्चात् 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से पहली बा अखिल भारतीय स्तर पर व्यवस्थित रूप से राष्ट्रवादी मांगों को वाणी देने की शुरूआत हुई।

स्वतंत्रता पश्चात् राष्ट्रवाद का विकास

भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत भारत एक संप्रभु धर्मनिरपेक्ष व लोकतान्त्रिक राष्ट्र बना। भारत को लोक कल्याणकारी राज्य के रूप में स्वीकार किया गया, जिसका लक्ष्य बिना किसी भेदभाव के सभी वर्गों का विकास निर्धारित किया गया।

स्वतंत्रता पश्चात् भारत को विभाजन की त्रासदी झेलनी पड़ी, साम्प्रदायिकता, भाषा, क्षेत्रवाद के नाम पर राज्यों का बंटवारा देखा। आधुनिक भारत को आतंकवाद, नक्सलवाद, वंशवाद, पूंजीवाद, जातिवाद आदि अनेक रूपों में अत्यध्कि संकटों का सामना करना पड़ता है। वैश्वीकरण के इसदौर में जब दुनिया अपने लघुस्वरूप Global Village में परिवर्तित हो रही है। वहां हमारा भारत मिश्रित सभ्यता, संस्कृति की अपनी सामाजिक विरासत व संपदा के एवं बौद्धिक प्रगतिशील युवा शक्ति के होते हुए भी इन बुराइयों से जूझ रहा है और विकास से वंचित हो रहा है।

स्वतंत्र भारत में राष्ट्रवाद के विकास में अनेक बाधाएं उपस्थित है। राष्ट्रवाद के अर्थ संकुचित एवं संर्कीण होते जा रहे हैं। बहुसंख्यक वर्ग के हितों को पूर्ण करना एवं उसी के अनुसार राष्ट्रवाद का अर्थ समझाने की कोशिश की जाती है। देश के कुछ हिस्सों में घटित होने वाली साम्प्रदायिक हिंसा, धार्मिक कट्टरता से ओत–प्रोत लोगों के वक्तव्य या फिर धर्म की आड़ लेकर इतिहास को झुठलाना। कोई भी राष्ट्र जिसमें विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं। विविध संस्कृतियां मिल कर जिसके रूप का श्रृंगार करती हैं, जहां प्रत्येक संस्कृति अपनी स्वायत्तता के साथ–साथ राष्ट्र की संस्कृति में भी समान भागीदार हो। ऐसे राष्ट में किसी भी संस्कृति का अतिवादी होना राष्ट्र की सुरक्षा व उसकी अखण्डता के लिये खतरनाक हो सकता है।

राष्ट्रवाद का बदलता स्वरूप

भारत में स्वतंत्रता के पश्चात् धीरे–धीरे राष्ट्रवाद का स्वरूप बदलने लगा। यद्यपि देश में सभी वर्गों का विकास तो लोकतान्त्रिक मूल्यों के अनुसार संविधानमत एक नैतिक दायित्व के रूप में स्वीकार किया गया, तो धर्म–निरपेक्षवादी भी इससे सहमत हैं कि जब देश को स्वतंत्र कराने में विभिन्न जातियों, धर्मों, सम्प्रदायों , किसानों तथा महिलाओं एवं आदिवासियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, तो यह देश सभी का है किसी एक बहुसंख्यक अथवा धर्म का नहीं है।

अभिव्यक्ति के स्वतंत्रता के नाम पर कई बार माहौल गरमा जाता है। जब भारत पाकिस्तान मैच में पाकिस्तान के जीतने पर कुछ मुस्लिम भाई जश्न मनाते, मिठाई खाते दिखते हैं। इसी प्रकार भगवा होती परिस्थितियों, अवधारणाओं, स्थानों, वस्तुओं से राष्ट्रवाद का स्वरूप बदलता दिखाई देता है। राष्ट्रवाद का स्वरूप तब विकृत हो जाता है जब भारत के अग्रणी विश्वविद्यालयों में ''अफजल गुरू की बरसी'' के कार्यक्रम आयोजित होते हैं। अफजल गुरू वही है जिसने हमारे लोकतंत्र के मंदिर संसद भवन पर हमले की साजिश रची थी। जे.एन.यू. में राष्ट्रविरोधी तत्व एकत्रित हो जाते हैं और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर जानबूझकर कश्मीर की आजादी के नारे लगाते दिखाई देते हैं। गोधरा कांड में मारे गए लोग सांस्कृतिक अतिवाद का परिणाम है। और साम्प्रदायिक वैमनस्यता फैलाने वालों की जीत थी जिससे कारगिल युद्ध ने धो दिया जब सारे भारतवासी एकजुट होकर पाकिस्तान की पराजय हेतु प्रार्थना करते दिखाई दिए। किन्तु देश प्रेम और राष्ट्रीयता भौगालिक सीमाओं की रक्षा में भागीदारी तक सीमित नहीं है। यह देश के भीतर सामूहिक हितों के प्रति समभाव व निष्ठा भी है। संविधान के प्रति आस्था, निष्ठा भी इससे जुड़े हैं।

सांस्कृतिक अतिवाद से प्रेरित उड़ीसा के कंधमाल से लेकर बंगलौर के पब में हुई हिंसक घटनाएं, मराठा संस्कृति के ठेकेदारो ने मराठी संस्कृति के नाम पर अपनी संकीर्ण मानसिकता को उस समय धार्मिक रंग देना प्रारम्भ कर दिया जब उसने भारतीय संस्कृति के राजदूत शाहरूख खान को राष्ट्र छोड़कर पड़ौसी राष्ट्र में निवास करने के लिए कहने लगा। इसी अति सांस्कृतिवादक राष्ट्रवाद के चलते भाषा की अभिव्यक्ति प्रेस पर हमले पत्रकारों की हत्यायें आदि के रूप में दिखाई देते हैं।

शोध कार्य के परिणाम

सांस्कृतिक अतिराष्ट्रवाद का दौर

वर्तमान में देश में सत्तारूढ़ सरकार भाजपा की है जिसे पर आरोप है कि वह अप्रत्यक्ष रूप से संघ के लक्ष्यों को 'भगवाकरण' के द्वारा पूर्ण कर रही है। शशि थरूर हिंदू पाकिस्तान और हिंदू फर्स्ट नेशन के वकतव्य देते हैं तो सांम्प्रदायिकता को हवा मिलने लगती है, देश की साझी संस्कृति को झटका लगता है। भारत में हिन्दू मतदाता 78.8 फीसदी, मुस्लिम मतदाता 14.2 फीसदी है किन्तु वर्तमान ''सरकार सबका साथ सबका विकास'' के अपने लक्ष्य के दृष्टिगत मुस्लिम महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिये तीन तलाक जैसे संवदनशील मुद्दे पर गंभीर दिखी व इसका विधेयक पारित करा चुके हैं। मुस्लिम आरक्षण का समर्थन कर रही है और सामाजिक सुधार के विधेयक लागू कर रही है।

बाबा साहेब अम्बेडकर ने कहा था– 'सभी को न्याय, समता, स्वतंत्रता व विकास के समान अवसर प्राप्त

होने चाहिए तभी लोकतंत्र की सच्ची स्थापना होगी। आज महानगरों के नाम परिवर्तित हो रहे हैं जैसे– इलाहाबाद का नाम 'प्रयागराज' हो चुका है। इस सम्बन्ध में इतिहासकारों का मानना है कि भारत में आधुनिक राष्ट्रवाद और राष्ट्रवादी की जो अवधारणा आज गढ़ी जा रही है उसकी राष्ट्रवाद की धारणा से कतई मेल नहीं है जो आजादी की लड़ाई के दौरान हमारे नेताओं और चिंतकों ने बनाई थी। प्रो० मृदुला मुखर्जी ने कहा कि – वह राष्ट्रवाद सर्वसमावेशी और बहुआयामी था, जिससे हर क्षेत्र, हर धर्म, हर सम्प्रदाय, हर भाषा–भाषी और सभी जनजातीय समूह के लोग शामिल थे।

भारत के राष्ट्रवादी चिंतकों में से कुछ महत्वपूर्ण नेता तथा विचारक हैं– महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, बाबा साहेब अम्बेडकर, ज्योतिबा फुले, सी. राजगोपालाचारी, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरू, बाल गंगाधर तिलक, सराजिनी नायडू, मौलाना अबुल कलाम आजाद, जय प्रकाश नारायण, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, मौलाना हुसैन अहमद मदनी, सरदार पटेल आदि थे। वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य पर नजर डालते हुए प्रोफेसर इरफान हबीब का कहना है कि – ''सांस्कृतिक एकरूपता की पुकार के बीच हम अति राष्ट्रवाद के समय में जी रहे हैं। स्वघोषित राष्ट्रवादियों और एक संस्कृति का उन्माद हमारी सामाजिक बनावट को टुकड़ों में बांटने का खतरा पैदा कर रहा है, एक दोहरेपन ने हमें घेर लिया है। राज्य और उसकी राजनीति के प्रति आपके नजरिये के आधार पर तय किया जा रहे हैं कि आप एक राष्ट्रवादी है या राष्ट्र विराधी।''

हमारे देश में कुछ महत्वपूर्ण लोग, सम्प्रदाय संघ राष्ट्र धर्म की बात करते हैं और राष्ट्र धर्म से उनका अभिप्राय सिर्फ बहुसंख्यक का राष्ट्र धर्म है। किसी भी सांस्कृतिक व धार्मिक विविधता वाले समाज में ऐसी बातें राष्ट्र के लिए खतरनाक हो सकती है। 'राष्ट्रधर्म' सभी धर्मों से बड़ा है, सभी विचारधाराओं से सर्वोपरि है इसे एकांकी बनने से बचाएं। हमें यह समझने की जरूरत है कि कोई भी धर्म कभी भी राष्ट्रधर्म के आड़े नहीं आ सकता। हर धर्म राष्ट्रधर्म में योगदान ही करता है।

निष्कर्ष

राष्ट्रधर्म का अर्थ राष्ट्रधर्म का अर्थ राष्ट्र के प्रति सर्वोच्च निष्ठा है–राष्ट्र है तो आप हैं आप हैं तो जीवन है। मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना'' इसे हमें अपने अंतर्मन में उतारना होगा। जैसे किसी शायर ने कहा है कि –

''हम भारत के बन्दे हैं, मजहब से नहीं वाकिफ,
गर काबा हुआ तो क्या बुतखान हुआ तो क्या।''

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Prof. Yogendra Singh- Modernization of Indian Tradition P-111, Rawat Publication, Jaipur 1986.

M.N. Srinivas - Social Change in Modern India, P.cvt, P-72.

आर०एन० शुक्ल – आधुनिक भारत का इतिहास : जनता का राष्ट्रवाद 1858–59 के जन–आन्दोलन–चारू गुप्ता, पृष्ठ–266–280।

राष्ट्रवाद (1885–1905) के विकास की गतिशीलता : आलोचनात्मक विश्लेषण : पंकजराग, पृष्ठ–499–500, प्रकाशक : हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।

आशीष कुमार सिंह (ed) –इंडिया एलाइव : वर्ष 1 अंक 8 मार्च, 2010 : भारत पर भारी पड़ते वाद।

डॉ० प्रशान्त शुक्ल – राष्ट्रधर्म के मायने ... इण्डिया एलाइव, पृष्ठ–14

रशीद किदवई – कट्टरवाद से लड़ने वाला वह राष्ट्रवादी, अमर उजाला, रविवार, 30 सितम्बर 2018।

इरफान हबीब – राष्ट्रवाद बनाम बोलने की आजादी : Last modified Friday, March 03, 2017 . 01 : OSISI रारा

प्रवक्ता.कॉम – सांस्कृतिक राष्ट्रवाद क्या है?

The Wire Hindi - हम अति राष्ट्रवाद के समय में जी रहे हैं : इतिहासकार प्रोफेसर इरफान हबीब राष्ट्रवाद की गढ़ी जा रही अवधारणा का आजादी की लड़ाई के वक्त की अवधारणा से मेल नहीं है : इतिहासकार प्रो० मृदुला मुखर्जी।

The Wire Published by the foundation for Independent Journalism.